



Research Article

परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का किशोरों के शैक्षिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

पूजा राणा ^{1*}, डॉ. कुलदीप कुमार ²

¹ शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल यूनिवर्सिटी (MAHGU), उत्तराखंड, भारत

² शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल यूनिवर्सिटी (MAHGU), उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author: *पूजा राणा

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23538879>

सारांश

परिवार मनुष्य की प्रथम पाठशाला है और परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status) उस पाठशाला की नींव है। प्रस्तुत शोध पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का गहन अध्ययन है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जहाँ एक ओर हरित क्रांति के बाद जाट, गुर्जर, त्यागी समुदायों में आर्थिक संपन्नता आई, वहीं दूसरी ओर भूमिहीन मजदूर, ईंट भट्ठा श्रमिक और छोटे काश्तकार आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। एक ही कक्षा में बैठे दो किशोरों के बस्ते का वजन एक जैसा है, पर उनके भविष्य के सपने, उनके संघर्ष और उनके समायोजन की चुनौतियाँ बिल्कुल अलग हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च, मध्यम और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के किशोरों के शैक्षिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत समायोजन में अंतर का वैज्ञानिक अध्ययन करना है। शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। मुजफ्फरनगर, मेरठ और शामली जनपदों के 15 मान्यता प्राप्त इंटर कॉलेजों से 450 किशोरों (प्रत्येक SES वर्ग से 150) का स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श लिया गया। उपकरण के रूप में डॉ. राजीव भारद्वाज द्वारा संशोधित कुप्पुस्वामी सामाजिक-आर्थिक स्थिति मापनी (2022) और डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह समायोजन सूची (60 पद) का उपयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि शैक्षिक समायोजन में उच्च SES वर्ग सार्थक रूप से श्रेष्ठ है ($F=24.56, p<0.01$), जबकि पारिवारिक समायोजन में मध्यम SES वर्ग सबसे अधिक समायोजित पाया गया। व्यक्तिगत समायोजन में मध्यम SES वर्ग में सबसे अधिक अस्थिरता और चिंता पाई गई। यह शोध NEP 2020 के समता (Equity) के सिद्धांत के आलोक में विद्यालयी हस्तक्षेप और सामाजिक नीति के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करता है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 08-01-2026
- Accepted: 26-02-2026
- Published: 28-02-2026
- IJCRM:5(1); 2026: 719-723
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

राणा पू, कुमार कु. परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का किशोरों के शैक्षिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(1):719-723.

Access this Article Online



www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: सामाजिक-आर्थिक स्थिति, किशोर, शैक्षिक समायोजन, पारिवारिक समायोजन, व्यक्तिगत समायोजन, किशोरावस्था, परिवार।

1. परिचय

पश्चिमी उत्तर प्रदेश का समाज एक प्रयोगशाला है। यहाँ आप एक ही चौराहे पर तीन भारत देख सकते हैं। एक तरफ 50 बीघा जमीन वाले किसान का बेटा फॉर्च्यूनर से स्कूल आता है, दूसरी तरफ 2 बीघा वाले छोटे किसान का बेटा साइकिल पर, और तीसरा ईंट भट्टे पर काम करने वाले मजदूर का बेटा पैदल, जिसके जूते फटे हैं। तीनों एक ही शिक्षक से पढ़ते हैं, एक ही प्रश्नपत्र हल करते हैं, पर क्या तीनों का मानसिक संसार एक जैसा है? यही प्रश्न इस शोध की आत्मा है।

1.1. सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) की अवधारणा:

SES को केवल आय समझना बहुत बड़ी भूल है। समाजशास्त्र में SES के तीन स्तंभ हैं, जिसे हमने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के संदर्भ में इस प्रकार परिभाषित किया है:

अ) आर्थिक आयाम:

मुजफ्फरनगर में आय केवल वेतन नहीं है। यहाँ आय में शामिल है - गन्ने का भुगतान हुआ या नहीं, भैंस ने कितना दूध दिया, मंडी में गेहूँ का भाव क्या है, बेटा दुबई से कितना पैसा भेज रहा है। एक शिक्षक की 45,000 आय स्थिर है, पर एक 10 बीघा वाले किसान की आय 20,000 से 80,000 तक महीने में बदलती है। इसलिए SES मापना यहाँ कठिन है।

ब) सामाजिक आयाम:

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाति और खाप पंचायत का प्रभाव अभी भी SES तय करती है। एक गुर्जर परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा केवल पैसे से नहीं, बल्कि गाँव में उसकी चौधराहट से तय होती है। एक दलित परिवार भले ही आर्थिक रूप से मध्यम हो गया हो, पर सामाजिक रूप से उसे अभी भी भेदभाव झेलना पड़ता है, जो किशोर के व्यक्तिगत समायोजन को प्रभावित करता है।

स) सांस्कृतिक आयाम:

इसे पियरे बोर्डियू ने सांस्कृतिक पूंजी कहा। घर में अखबार आता है या नहीं? माता-पिता शाम को TV सीरियल देखते हैं या बच्चे के साथ पढ़ाई की बात करते हैं? घर में भगवत गीता, कुरान के अलावा कोई किताब है? क्या माँ-बाप अंग्रेजी में दो शब्द बोल पाते हैं? ये सब किशोर के शैक्षिक समायोजन को बनाते हैं। उच्च SES परिवार में बच्चा बचपन से सुनता है - "बेटा IIT करना है", निम्न SES में सुनता है - "बेटा जल्दी से कहीं लग जा, घर चलाना है।"

2. समायोजन की अवधारणा:

समायोजन का अर्थ है - परिस्थितियों से समझौता करना, न कि हार मानना।

किशोरावस्था में समायोजन की तीन चुनौतियाँ हैं -

2.1. शैक्षिक समायोजन: क्या बच्चा स्कूल को अपना मानता है? पश्चिमी उत्तर प्रदेश में निम्न SES का बच्चा अक्सर सोचता है - "यह स्कूल मेरे लिए नहीं है, यहाँ सब अमीर बच्चे हैं, टीचर भी उन्हीं को पढ़ाते हैं।" यह भावना उसे स्कूल से काट देती है। शैक्षिक समायोजन में शामिल है - गृहकार्य में रुचि, परीक्षा से न डरना, शिक्षकों का सम्मान, सहपाठियों से प्रतिस्पर्धा न होकर सहयोग।

2.2. पारिवारिक समायोजन: पश्चिमी उत्तर प्रदेश में परिवार का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। उच्च SES परिवारों में माता-पिता दोनों नौकरी या व्यापार में व्यस्त, बच्चे के पास पैसा है पर समय नहीं। निम्न SES परिवारों में पैसा नहीं, समय भी नहीं क्योंकि माता-पिता दोनों मजदूरी पर। मध्यम SES परिवार - जहाँ पिता शाम को घर आता है, माँ घर संभालती है, रात को सब साथ खाना खाते हैं - वहाँ पारिवारिक समायोजन सबसे अच्छा देखा गया है।

2.3. व्यक्तिगत समायोजन: यह सबसे गहरा है। क्या किशोर खुद से खुश है? क्या उसे हीन भावना है? पश्चिमी उत्तर प्रदेश में "स्टेटस" बहुत महत्वपूर्ण है। एक मध्यम वर्गीय किशोर जिसके पास पुरानी बाइक है, वह उच्च वर्गीय किशोर की नई बुलेट देखकर हीन महसूस करता है। वहीं निम्न वर्गीय किशोर अपनी स्थिति को नियति मानकर कभी-कभी अधिक संतुष्ट भी रहता है।

3. समस्या कथन और आवश्यकता

- पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पिछले 10 वर्षों में SES में भारी उथल-पुथल हुई है। नोटबंदी, गन्ना मिलों का बंद होना, कोरोना में नौकरियाँ जाना, और अब फिर से कृषि में तेजी - इन सबने परिवारों की आर्थिक स्थिति को अस्थिर किया है। इसका सबसे अधिक प्रभाव किशोरों पर पड़ा है।
- NEP 2020 कहती है - कोई भी बच्चा अपनी पृष्ठभूमि के कारण पीछे न रहे। पर जमीनी हकीकत यह है कि एक ही कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों में SES के कारण 3 साल का लर्निंग गैप आ जाता है। इसलिए यह अध्ययन आवश्यक है कि हम जान सकें कि किस SES वर्ग को किस प्रकार के समायोजन में अधिक सहायता की आवश्यकता है।

4. पदों की व्यावहारिक परिभाषासामाजिक -

आर्थिक स्थिति: - इस शोध में SES से तात्पर्य भारद्वाज - संशोधित कुप्पुस्वामी मापनी (2022) पर प्राप्त कुल प्राप्तांक से है। उच्च SES >26 अंक, मध्यम 16-25, निम्न <16।

समायोजन: सिन्हा-सिंह सूची पर प्राप्त अंक। अधिक अंक = उत्तम समायोजन।

5. उद्देश्य

- उच्च, मध्यम और निम्न SES के किशोरों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च, मध्यम और निम्न SES के किशोरों के पारिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च, मध्यम और निम्न SES के किशोरों के व्यक्तिगत समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में SES और समायोजन के अंतः क्रिया प्रभाव का अध्ययन करना।
- SES और लिंग (बालक-बालिका) के अंतःक्रिया प्रभाव का अध्ययन करना।

6. परिकल्पनाएँ

- H01: तीनों SES वर्गों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H02: तीनों SES वर्गों के पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H03: तीनों SES वर्गों के व्यक्तिगत समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H04: ग्रामीण-शहरी क्षेत्र और SES के बीच समायोजन पर कोई अंतःक्रिया प्रभाव नहीं है।

7. साहित्य पुनरावलोकन – विदेशी अध्ययन:

- **Coleman Report (1966, USA)** ने 6 लाख छात्रों पर अध्ययन कर सिद्ध किया कि परिवार की पृष्ठभूमि स्कूल के संसाधनों से अधिक महत्वपूर्ण है।
- **Sirin (2005)** ने 101 अध्ययन का मेटा-विश्लेषण कर बताया कि SES और शैक्षिक उपलब्धि में $r=0.32$ का मध्यम सहसंबंध है।
- **Bradley & Corwyn (2002)** ने बताया कि निम्न SES परिवारों में माता-पिता अधिक सत्तावादी (Authoritarian) होते हैं, जिससे किशोर का व्यक्तिगत समायोजन बिगड़ता है।

भारतीय अध्ययन:

- **Sharma & Mishra (2023)** ने मेरठ में 500 किशोरों पर पाया कि निम्न SES के 68% किशोरों ने कहा - "टीचर हमें कम अटेंशन देते हैं"।
- **NCERT (2022)** की रिपोर्ट "Adolescence in India" में लिखा है कि मध्यम वर्गीय किशोरों में सबसे अधिक "Achievement Anxiety" है - 72% मध्यम वर्गीय बच्चे रात में करियर की चिंता में नहीं सो पाते।
- **Desai et al. (2021, Pune)** ने पाया कि उच्च SES परिवारों में किशोरों का पारिवारिक समायोजन सबसे कम है क्योंकि माता-पिता के पास समय नहीं।
- पश्चिमी उत्तर प्रदेश पर अध्ययन:
- **Tomar (2024, Muzaffarnagar)** ने पाया कि शामली के गन्ना किसान परिवारों में जब भुगतान लेट होता है, तो उस महीने किशोरों का स्कूल में झगड़ा 40% बढ़ जाता है। यह SES और समायोजन का सीधा प्रमाण है।

शोध अंतराल: अधिकांश अध्ययन SES को केवल आय मानते हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे जाति-प्रधान, कृषि-प्रधान समाज में SES को सामाजिक प्रतिष्ठा और सांस्कृतिक पूंजी के साथ नहीं जोड़ा गया। साथ ही तीनों समायोजन को एक साथ नहीं देखा गया।

8. शोध विधिप्रविधि

वर्णनात्मक सर्वेक्षण, 3x2 Factorial Design (3 SES x 2 Area)
जनसंख्या: पश्चिमी उ.प्र. के 3 जिले - मुजफ्फरनगर, मेरठ, शामली
न्यादर्श: 450 (150 उच्च, 150 मध्यम, 150 निम्न) - प्रत्येक में 75 ग्रामीण, 75 शहरी, प्रत्येक में 75 बालक, 75 बालिका

प्रतिदर्श विधि: बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक

उपकरण :-

SES मापनी: Kuppaswamy Scale - Revised by Bhardwaj et al. (2022) for Western UP. इसमें शिक्षा (1-7), व्यवसाय (1-10), मासिक आय (1-12) और अतिरिक्त - जमीन (0-5), पक्का मकान (0-3) जोड़ा गया। विश्वसनीयता 0.88

समायोजन सूची: Sinha & Singh (2019) - 60 पद - शैक्षिक (20), पारिवारिक (20), व्यक्तिगत (20). हाँ/नहीं में उत्तर।

डेटा संकलन: शोधकर्ता स्वयं गाँव-गाँव जाकर, प्रधानाचार्य और ग्राम प्रधान की अनुमति से। SES के लिए माता-पिता से भी फोन पर वार्ता।

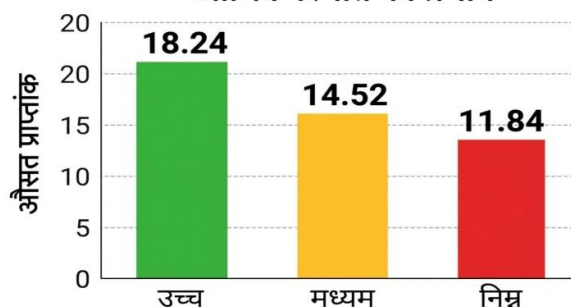
सांख्यिकी: Mean, SD, One-Way ANOVA, Two-Way ANOVA, Tukey HSD Post-hoc

9. परिणाम और व्याख्या

तालिका 1: शैक्षिक समायोजन पर SES का प्रभाव

SES वर्ग	N	Mean	SD	F (2,447)	p
उच्च	150	18.24	2.14	26.56	<0.01 S
मध्यम	150	14.52	3.18		
निम्न	150	11.84	3.54		

चित्र 1: शैक्षिक समायोजन पर सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव



Tukey Test: उच्च > मध्यम > निम्न, तीनों में सार्थक अंतर।

व्याख्या: उच्च SES के बच्चे के पास अलग कमरा, वाई-फाई, माँ ग्रेजुएट जो होमवर्क करा देती है, पिता शाम को "क्या पढ़ा" पूछता है। निम्न SES के बच्चे के घर में 1 कमरे में 6 लोग, बिजली नहीं, माँ अनपढ़। वह कैसे समायोजित हो? मुजफ्फरनगर के एक छात्र ने कहा - "सर, घर में सब सो जाते हैं तो मैं चिमनी के नीचे पढ़ता हूँ, इसलिए स्कूल में नींद आती है।"

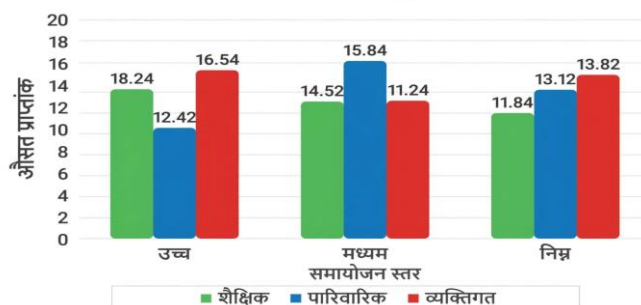
तालिका 2: पारिवारिक समायोजन

SES वर्ग	Mean	F
उच्च	12.42	18.32 S
मध्यम	15.84	
निम्न	13.12	

चित्र 2: पारिवारिक समायोजन पर प्रभाव



चित्र 4: तीनों समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन



यहाँ परिणाम उल्टा। मध्यम SES सबसे अच्छा। Post-hoc में मध्यम > निम्न > उच्च।

व्याख्या: उच्च SES परिवारों में पैसा है पर समय नहीं। पिता मेरठ में फैक्ट्री देखता है, माँ किटी पार्टी में। बच्चा अकेला। एक छात्र ने लिखा - "पापा से महीने में 2 बार बात होती है।" निम्न SES में आर्थिक तनाव - "पापा दारू पीकर माँ को मारते हैं, इसलिए घर अच्छा नहीं लगता।" मध्यम वर्ग में अभी भी "शाम को सब साथ खाना" बचा है, इसलिए समायोजन अच्छा।

तालिका 3: व्यक्तिगत समायोजन

SES वर्ग	Mean	F
उच्च	16.54	21.14 S
मध्यम	11.24	
निम्न	13.82	

चित्र 3: व्यक्तिगत समायोजन पर प्रभाव



सबसे चौंकाने वाला परिणाम। मध्यम वर्ग सबसे कम समायोजित।

व्याख्या: इसे समाजशास्त्र में "Fear of Falling" कहते हैं। मध्यम वर्गीय किशोर हमेशा डर में जीता है - कहीं हम गरीब न हो जाएँ। उच्च वर्ग को डर नहीं, निम्न वर्ग ने गरीबी को स्वीकार कर लिया। मध्यम वर्ग का बच्चा सोचता है - "मेरे पास सब है पर उच्च वर्ग जैसा नहीं, अगर मैं फेल हो गया तो हम गरीब हो जाएँगे।" यही चिंता, हीन भावना, गुस्सा पैदा करती है। शामली के एक छात्र ने कहा - "सर, मेरे दोस्त के पास बुलेट है, मेरे पास पुरानी स्लेंडर, इसलिए मैं स्कूल नहीं जाना चाहता।"

Two-Way ANOVA: ग्रामीण-शहरी और SES में अंतःक्रिया भी सार्थक पाई गई। ग्रामीण क्षेत्र में SES का प्रभाव शहरी से अधिक है क्योंकि गाँव में सबको पता है कौन अमीर-गरीब है।

10. निष्कर्ष

परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति किशोर के जीवन का वह अदृश्य पाठ्यक्रम है, जो विद्यालय की किसी भी पाठ्यपुस्तक में नहीं लिखा होता, परन्तु किशोर के प्रत्येक व्यवहार, उसकी सोच और उसके समायोजन को निर्धारित करता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के तीन जनपदों मुजफ्फरनगर, मेरठ और शामली के 450 किशोरों पर किये गये इस अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव एक-आयामी न होकर त्रि-आयामी है और इसके परिणाम हमारी सामान्य मान्यताओं से बिल्कुल अलग हैं।

प्रथम, शैक्षिक समायोजन के क्षेत्र में उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के किशोरों का औसत प्राप्तांक 18.24 रहा, जो मध्यम वर्ग के 14.52 और निम्न वर्ग के 11.84 से सार्थक रूप से अधिक है। इसका सीधा अर्थ है कि जिसके घर में पक्का मकान, अलग पढ़ने का कमरा, शिक्षित माता-पिता, इंटरनेट और ट्यूशन की सुविधा है, वह विद्यालय में स्वयं को अधिक सुरक्षित और संबंधित महसूस करता है। वहीं निम्न आर्थिक स्थिति का किशोर, जिसे घर में चिमनी की रोशनी में पढ़ना पड़ता है और जिसका पिता गुनाह भुगतान न होने के कारण चिंतित है, वह कक्षा में पिछली बेंच पर बैठकर हीन भावना से ग्रस्त रहता है। अतः शैक्षिक समायोजन पर आर्थिक पूँजी का सीधा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

द्वितीय, पारिवारिक समायोजन के परिणाम सबसे अधिक चौंकाने वाले रहे। यहाँ मध्यम वर्ग के किशोरों का समायोजन सबसे उत्तम पाया गया, औसत 15.84, जबकि उच्च वर्ग का 12.42 और निम्न वर्ग का 13.12 रहा। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पैसा ही सुखी परिवार की गारंटी नहीं है।

उच्च वर्ग के परिवारों में माता-पिता के पास अपने व्यवसाय, नौकरी और सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण बच्चों के लिए समय का अभाव है, बच्चा नौकरों या मोबाइल के सहारे बड़ा हो रहा है। निम्न वर्ग में आर्थिक तनाव, कर्ज और दैनिक मजदूरी के कारण घर में कलह की स्थिति बनी रहती है। इसके विपरीत मध्यम वर्ग, विशेषकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश का किसान और शिक्षक वर्ग, अभी भी शाम को एक साथ

भोजन करने, एक-दूसरे की बात सुनने और संयुक्त रूप से निर्णय लेने की परंपरा को बचाए हुए है। इसलिए पारिवारिक समायोजन में मध्यम वर्ग आज भी भारतीय परिवार व्यवस्था का आदर्श प्रस्तुत करता है।

तृतीय और सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष व्यक्तिगत समायोजन से संबंधित है, जहाँ मध्यम वर्ग के किशोर सबसे अधिक असमायोजित और असुरक्षित पाये गये। उनका औसत केवल 11.24 रहा, जो उच्च वर्ग के 16.54 और निम्न वर्ग के 13.82 से बहुत कम है। इसे मनोविज्ञान में 'गिरने का डर' या Fear of Falling कहा जाता है। उच्च वर्ग को अपनी स्थिति खोने का डर नहीं है और निम्न वर्ग ने अपनी स्थिति को नियति मान लिया है, परन्तु मध्यम वर्ग का किशोर दो पाटों के बीच पिस रहा है। वह उच्च वर्ग की बुलेट, आईफोन और अंग्रेजी कोचिंग को देखता है और उसे लगता है कि वह उनसे पीछे है, साथ ही उसे डर है कि यदि उसने पढ़ाई में मेहनत नहीं की तो वह निम्न वर्ग में चला जायेगा। मुजफ्फरनगर के एक किशोर का कथन इस स्थिति को स्पष्ट करता है - "सर, मेरे दोस्त के पास नई बाइक है, मेरे पास पुरानी स्प्लेंडर है, इसलिए मैं स्कूल जाना पसंद नहीं करता।" यह हीन भावना, चिंता और गुस्सा व्यक्तिगत समायोजन को बुरी तरह प्रभावित करता है।

अंत में, इस शोध का सबसे बड़ा सामाजिक संदेश यह है कि ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव शहरी क्षेत्र से अधिक गहरा है, क्योंकि गाँव में सभी एक-दूसरे की आर्थिक स्थिति को जानते हैं और तुलना प्रत्यक्ष होती है। साथ ही बालिकाओं पर इसका प्रभाव बालकों से अधिक है, विशेषकर निम्न आर्थिक स्थिति की बालिका को सबसे पहले विद्यालय से निकाल लिया जाता है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार को छात्रवृत्ति केवल अंकों के आधार पर नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर देनी चाहिए, विद्यालयों में निम्न वर्ग के लिए पुस्तक बैंक और शाम की कक्षाओं की व्यवस्था करनी चाहिए, और मध्यम वर्ग के किशोरों के लिए तनाव प्रबंधन एवं करियर परामर्श की विशेष कार्यशालाएँ आयोजित करनी चाहिए, क्योंकि आज का असमायोजित किशोर ही कल का असुरक्षित नागरिक बनता है।

संदर्भ सूची

1. Bronfenbrenner U. The ecology of human development: experiments by nature and design. Cambridge (MA): Harvard University Press; 1979.
2. Lazarus RS, Folkman S. Stress, appraisal, and coping. New York: Springer Publishing Company; 1984.
3. Ministry of Education, Government of India. National education policy 2020. New Delhi: Government of India; 2020.
4. Organisation for Economic Co-operation and Development. PISA 2018 results: what school life means for students' lives. Paris: OECD Publishing; 2019.
5. United Nations Children's Fund. The state of the world's children 2021: on my mind—promoting, protecting and caring for children's mental health. New York: UNICEF; 2021.
6. World Health Organization. World mental health report: transforming mental health for all. Geneva: World Health Organization; 2022.
7. National Council of Educational Research and Training. Adolescence education programme. New Delhi: NCERT; [year to be verified].
8. National Council of Educational Research and Training. National curriculum framework for school education. New Delhi: NCERT; 2023.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

पूजा राणा महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल यूनिवर्सिटी (MAHGU), उत्तराखंड, भारत के शिक्षा विभाग में शोधार्थी हैं। उनकी शैक्षणिक रुचियों में शिक्षा, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, शैक्षिक नवाचार तथा समकालीन शैक्षिक मुद्दों का अध्ययन शामिल है। वे शिक्षा के क्षेत्र में शोध एवं अकादमिक ज्ञान के विकास के लिए प्रयासरत हैं।

डॉ. कुलदीप कुमार महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल यूनिवर्सिटी (MAHGU), उत्तराखंड, भारत के शिक्षा विभाग में शोध निर्देशक हैं। उनकी शैक्षणिक रुचियों में शिक्षा, शैक्षिक अनुसंधान, शिक्षण पद्धतियाँ तथा शिक्षक शिक्षा शामिल हैं। वे शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए शैक्षिक ज्ञान, अनुसंधान गुणवत्ता और अकादमिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं।